सरसों: भारत की एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल

पुष्पेंद्र कुमार मिश्रा , आदर्श डंगवाल
गोविंद बल्लभ पंत विश्वविद्यालय, पंतनगर
ई-मेल - **pkm09235931@gmail.com**

परिचय

भारत में तिलहन फसलों का महत्वपूर्ण स्थान है, और सरसों उनमें प्रमुख भूमिका निभाती है। सरसों (Brassica spp.) मुख्य रूप से खाद्य तेल उत्पादन के लिए उगाई जाती है और भारतीय किसानों की आजीविका में इसका बड़ा योगदान है। यह रबी मौसम की प्रमुख फसल है, जो मुख्य रूप से उत्तर भारत, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल में उगाई जाती है।

सरसों की प्रजातियाँ

सरसों की कई प्रमुख प्रजातियाँ हैं, जिनका उत्पादन जलवायु और क्षेत्र के आधार पर भिन्न होता है:

१.भारतीय सरसों (Brassica juncea) – यह सबसे अधिक उगाई जाने वाली प्रजाति है, जिसमें तेल की मात्रा अधिक होती है।

२.पीली सरसों (Brassica rapa var. yellow sarson) – मुख्य रूप से उत्तर-पूर्वी भारत में उगाई जाती है और मसाले के रूप में भी इस्तेमाल होती है।

३.तोरी (Brassica rapa var. toria) – यह जल्दी पकने वाली प्रजाति है, जो बिहार, पश्चिम बंगाल और असम में लोकप्रिय है।

४.रायडा (Brassica carinata) – यह मुख्य रूप से राजस्थान और गुजरात में उगाई जाती है।

५.गोल सरसों (Brassica nigra) – इसका उपयोग मुख्य रूप से मसाले के रूप में किया जाता है।

जलवायु एवं मिट्टी

सरसों की खेती ठंडी जलवायु में अधिक उपयुक्त होती है। यह 10-25 डिग्री सेल्सियस तापमान पर अच्छी तरह बढ़ती है। अधिक नमी या पाला इस फसल को नुकसान पहुँचा सकता है।

सरसों के लिए दोमट और जलोढ़ मिट्टी सर्वोत्तम मानी जाती है, जिसमें जलनिकासी की अच्छी सुविधा हो। अम्लीय और क्षारीय मिट्टी में इसका उत्पादन कम हो जाता है।

खेती की विधि

सरसों की खेती के लिए निम्नलिखित चरण महत्वपूर्ण हैं:

- **बुवाई का समय** – अक्टूबर से नवंबर
- **बीज की मात्रा** – 4-6 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर
- **खाद एवं उर्वरक** – 80-100 किग्रा नाइट्रोजन, 40-50 किग्रा फास्फोरस और 20-30 किग्रा सल्फर प्रति हेक्टेयर उपयुक्त होता है।
- **सिंचाई** – 2-3 सिंचाइयाँ आवश्यक होती हैं, पहली सिंचाई 30-35 दिनों के बाद और दूसरी फूल आने के समय करनी चाहिए।
- **निराई-गुड़ाई** – खरपतवार नियंत्रण के लिए समय-समय पर निराई-गुड़ाई आवश्यक होती है।

कीट एवं रोग नियंत्रण

सरसों की फसल को विभिन्न कीट एवं रोग प्रभावित कर सकते हैं, जिनका उचित प्रबंधन आवश्यक है:

1.कीट –

- एफिड (लाही)
- तना छेदक
- फली छेदक

नियंत्रण: जैविक कीटनाशकों या नीम तेल का छिड़काव लाभकारी हो सकता है।

2.रोग –

- सफेद रतुआ
- अल्टरनेरिया ब्लाइट
- स्क्लेरोटिनिया रॉट

नियंत्रण: फफूंदनाशकों का छिड़काव और संतुलित उर्वरक प्रबंधन आवश्यक होता है।

उपयोग एवं आर्थिक महत्व

१.खाद्य तेल उत्पादन – सरसों के बीजों से निकाला गया तेल भारत में एक लोकप्रिय खाद्य तेल है।

२.खली (पशु आहार) – तेल निकालने के बाद बची खली पशुओं के लिए पोषक चारे के रूप में उपयोग होती है।

३.मसाला – पीली सरसों के बीजों का उपयोग भारतीय व्यंजनों में मसाले के रूप में किया जाता है।

१.औषधीय महत्व – सरसों का तेल पारंपरिक चिकित्सा में सिरदर्द, त्वचा रोगों और मांसपेशियों की समस्याओं में उपयोग किया जाता है।

सरसों उत्पादन की चुनौतियाँ एवं समाधान

सरसों उत्पादन में कुछ प्रमुख समस्याएँ देखी जाती हैं, जैसे:

- जलवायु परिवर्तन के कारण पैदावार में अस्थिरता।
- कीट और रोगों का बढ़ता प्रभाव।
- परंपरागत खेती के कारण कम उत्पादन।

समाधान: वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों, उन्नत किस्मों के बीजों, जैविक खेती और बेहतर जल प्रबंधन तकनीकों को अपनाने से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

निष्कर्ष

सरसों भारतीय कृषि की एक महत्वपूर्ण फसल है, जो किसानों की आजीविका और देश की खाद्य तेल आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक है। उन्नत कृषि तकनीकों और टिकाऊ खेती को अपनाकर सरसों उत्पादन में और वृद्धि की जा सकती है।

संदर्भ (References):

१.भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR): भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) द्वारा प्रकाशित सरसों से संबंधित विभिन्न रिपोर्ट और अध्ययन इस फसल की कृषि पद्धतियों, रोग-कीट नियंत्रण, और उत्पादन तकनीकों के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान करते हैं।

२.कृषि विश्वविद्यालयों और संस्थानों द्वारा शोध पत्र: जैसे, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, और अन्य क्षेत्रीय कृषि संस्थान सरसों के उत्पादन पर निरंतर शोध कर रहे हैं और नए तकनीकी उपायों पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

३.कृषि मंत्रालय, भारत सरकार: भारत सरकार के कृषि मंत्रालय द्वारा जारी किए गए कृषि सांख्यिकी आंकड़े और रिपोर्टों में सरसों की खेती से संबंधित डेटा और आर्थिक जानकारी मिलती है।

४.देशी कृषि प्रकाशन: "कृषि संसार" और "कृषि जागरण" जैसी हिंदी कृषि पत्रिकाएं सरसों की खेती से संबंधित उन्नत तकनीकों, बीज प्रजातियों, और रोग नियंत्रण उपायों पर जानकारी प्रकाशित करती हैं।

5."भारतीय तिलहन फसलें" (Indian Oilseed Crops) - किताबें और जर्नल: तिलहन फसलों, विशेषकर सरसों के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि उत्पादन, उर्वरक प्रबंधन, और जलवायु पर आधारित शोध और केस स्टडी में यह किताबें सहायक होती हैं।